केवल निजी
वितरण हेतु

हम एक हैं

वर्ष 19
अंक 2
अगस्त - नवम्बर
2011

सम्पादकीय - पृ...2

आगामी चौमासे के कार्यक्रम - पृ...2

रेयुकाई का संसार - पृ...3

अनुभव सागर पार से - पृ...4-5

रेयुकाई समाचार - पृ...6-12

नीलसूत्र, एक परिचय - पृ...13

उपदेश व कार्यक्रम संवर्धन समिति अध्यक्ष का स्तंभ - पृ...13

श्रीमती किमी कोतानी के विचार - पृ...14

रेयुकाई अतुल्नीय कैसे है - पृ...14

आओ जापानी सीखें - पृ...15

रेयुकाई अभ्यास - पृ...16

आईए अपने वंशजों को सौपें एक श्रेयतर समाज!

हम एक हैं के संपादक मंडल के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक अभिनंदन।

विगत कुछ माह हम केन्द्रीय कार्यालय में अत्यधिक सक्रिय रहे हैं। कुछ उल्लेखनीय प्रगतियां भी हुई हैं। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि 'केन्द्र' अब नई दिल्ली से गुड़गाँव स्थानांतरित हो गया है। आपका 'दिल्ली कार्यालय' अब 'गुड़गाँव केन्द्र' है जिसका पता एवं वहाँ किस प्रकार पहुँचे इसके निर्देश इस अंक में देखें।

नये 'केन्द्र' में बहुत जगह है जिससे हमें सदस्य गतिविधियों की अतिरिक्त सम्भावना मिलती है। हमारे पास गतिविधि कक्ष है जहाँ सदस्य आकर टेबल टैनिस, पुस्तकालय व इण्टरनैट सुविधा का आनन्द उठा सकते हैं। हमने अपने टी.वी. में टाटा स्काई का सम्पर्क स्थापित करवा दिया है जिससे सदस्य मल्टीमीडिया उपयोग कर सकते हैं।

भाषा अध्ययन कक्ष में भी अब और अधिक स्थान है व और विद्यार्थी सुविधाएं। सदस्यों हेतु अब हमारे पास सभा-सम्मेलन के लिए भी स्थान है। गुड़गाँव या राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का दौरा करने आए सभी शिबुचो अब 'केन्द्र' के 'गज़ेम्बो' कक्षों में ठहरने के लिए आमंत्रित हैं।

कृपया ध्यान दें, इस अंक से 'हम एक हैं' वित्तीय वर्ष के समकालीन प्रकाशित होगा। अब से इसके अंक अप्रैल, अगस्त व दिसम्बर में प्रति वित्तीय वर्ष निकाले जाएंगे। हम आशा करते हैं कि सम्पादक मंडल समयानुसार वितरण हेतु कार्यशील होगा। कृपया अपने लेख व छवियां प्रकाशन समय सीमा अनुसार भेजते रहें।

अगस्त माह का इस वर्ष विशेष महत्व है। हमारे अगले 'होम्यो दीक्षा समारोह' व 'अधिनायक प्रशिक्षण शिविर' इसी दौरान हैं। मैं आप सभी को इस हेतु आवेदन व प्रशिक्षण ग्रहण कर अपने होम्यो व सोकाईम्यो लिखने के लिए प्रेरित करता हूँ। आगामी वर्ष से यह सभी विशिष्ट योग्यताओं के लिए अनिवार्य होगा। अधिनायक प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष राजगीर में होगा। सभी जुन-शिबुचो एवं शिबुचो पुनः अधिक सार्थक रेयूकाई अभ्यास के नवीन प्रयास हेतु यहाँ सम्मिलित होंगे।

मैं आगामी महीनों के लिए सभी सदस्यों का पुनः अभिनंदन करता हूँ। अपनी प्रतिबद्धताओं पर अडिग रहिए और आइए, हम अपनी संतति के लिए इस संसार को श्रेयस्कर बनाने की अपनी प्रतिज्ञा को पुनः दोहराएं।

नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो

सम्पादक

आगामी चौमासे के कार्यक्रम

भावी चौमासे के विशेष कार्यक्रमः

7 अगस्त 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु होम्यो दीक्षा समारोह का आयोजन।

13 अगस्त 2011 राजगीर, बिहार में सदस्यों हेतु अधिनायक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।

दिल्ली में भावी चौमासे के आम कार्यक्रमः

1, 8, 15, 22 व 29 मई 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

5, 12, 19 व 26 जून 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

3, 10, 17, 24 व 31 जुलाई 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

21 व 28 अगस्त 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

बोकारो में भावी चौमासे के आम कार्यक्रमः

1, 8, 15, 22 व 29 मई 2011 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

5, 12, 19 व 26 जून 2011 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

3, 10, 17, 24 व 31 जुलाई 2011 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

7, 21 व 28 अगस्त 2011 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

फ़रूखाबाद में भावी चौमासे के आम कार्यक्रमः

1 व 29 मई 2011 फ़रूखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

5 व 26 जून 2011 फ़रूखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

3 व 31 जुलाई 2011 फ़रूखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

7 व 28 अगस्त 2011 फ़रूखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवासरीय आम सभा का आयोजन।

रेयुकाई का संसार

शाकादेन के भीतरी भाग का भव्य दृश्य

व्यक्तिगत अनुभव

सागरपार से

"आइये हम प्रतिदिन एक सकारात्मक जीवन जीयें"

मैं अब चालीस वर्षीय हूँ, यदि मैं स्वाभाविक रूप से अस्सी साल जीती हूँ तो मैं चालीस साल और जीऊंगी। जब मैं अपने पिछले चालीस साल की ओर देखती हूँ तो मैं सोचती हूँ मैंने चालीस साल उद्येश्यहीन होकर बिताया। और एक दिन मैंने अपने पतिदेव से पूछा - आप क्या मुझे इस दुनिया में रहने के योग्य समझते हो? उसी क्षण पतिदेव ने कहा, बिल्कुल! मैं और हायेशीसान यह महसूस करते हैं और प्रसन्न हैं कि आप इस दुनिया में हो। यह सुनकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई और मैंने सोचा मुझे उनको धन्यवाद देना चाहिये और उनसे माफ़ी मांगनी चाहिये। मेरा धन्यवाद देना और माफ़ी मांगने का कारण यह था कि मेरे पति और हायेशीसान ने आज मैं जो कुछ भी हूँ, मुझे बनाया।

अपनी शादी के कुछ समय के बाद 1976 {शोया 51} में मैं रेयूकाई की सदस्या बनी। उन दिनों मेरे सब भाई और बहनें वाई.जी.एस. के सक्रिय सदस्य थे, परन्तु मैं तो नाममात्र की सदस्या थी और घर में ही सूत्रपाठ करती थी और कभी-कभी रेयूकाई कार्यक्रम में सम्मिलित होती थी। 1988 में जब मैं अपने सास-ससुर के साथ रहने लगी, तब से ही मैं वास्तविकता में गम्भीरतापूर्वक रेयूकाई अभ्यास करने लगी {शोया 63}। इस समय से पूर्व तक मैं बड़ी लापरवाह जिंदगी जीती रही थी; सुबह जब मर्ज़ी उठती थी, जब मर्ज़ी खाती थी और जो मर्ज़ी में आता करती थी।

पर उनके आने से परिस्थिति ही बदल गई और मैं ख़ुदगर्ज़ जिंदगी नहीं बीता पा रही थी। मेरी सास बहुत परिश्रमी और बुद्धिमती महिला हैं। मेरा चरित्र उनके चरित्र के विपरीत था और मैं सोचती हूँ इसी कारण हमारी आपस में नहीं बनती थी। वे मुझ से सुबह जल्दी जागती थीं, मेरे जागने से पहले ही जो मैं तैयार करने की सोचती थी वह तैयार कर देती थीं, जैसे की सोयाबीन का सूप बनाना, कपड़े धोना आदि। मुझे घर के काम करने का अवसर ही नहीं मिलता था, मेरी सास घर का हर काम कर लेती थी।

इस तरह चलता रहा और मेरी उलझन बढ़ती गई। उनको धन्यवाद देने की जगह मुझे उन से विरक्ति हो रही थी, उनकी बेवजह दया के कारण ही। मैंने सोचा, ऐसा नहीं होना चाहिये और यदि इसी तरह चलता रहा तो मैं अपनी सास पर बिगड़ जाऊँगी और उनके बारे में बुरा सोचूँगी, और एक बुरी इन्सान बनूँगी। मेरी प्रतिक्रिया की ज़िन्दगी बदलने के लिये मैंने रेयूकाई की शिक्षा पर मन से अमल किया, जो कि पहले मैं जैसे-तैसे ही किया करती थी।

सच बात तो यह है कि क्यूँकि मेरे सास-ससुर को किसी कारणवश पेंशन नहीं मिलती थी, इसलिये वे हमें आर्थिक रूप से सहायता नहीं कर सकते थे, और इसीलिये शायद मेरी सास घर के काम में बहुत परिश्रम करती थी। अब मैं उनकी मन की भावना को जानती हूँ, किंतु पहले मैं कुछ नहीं समझती थी। और तब मैंने रेयूकाई के संगठन में जाकर रेयूकाई की परिचर्चा में भाग लिया और वरिष्ठ सदस्यों से और अपने मित्रों से खुलकर अपने विचारों को बताया। उन्होंने बताया कि "क्या आपने कभी अपने सास के विचारों के बारे में सोचा?" "क्या तुमसे कोई भूल नहीं हुई?" "क्या अपने भीतर झाँक के कभी तुमने देखा?" तब पहली बार मैंने अपने विचारों के बारे में जानने के महत्व को समझा और जाना कि मेरी सोच यह थी "मुझ से कुछ गलती नहीं हुई"। यह सोच इन्सान को कैसा स्वार्थी बना देती है, यह मैंने समझा। और धीरे-धीरे मैं अनुभव करने लगी कि पता नहीं कैसे मैं अपने सास से माफ़ी मांगू।

जो बात मेरे दिल को लगी, वह यह थी कि जब-जब अपनी सास से मैं असन्तुष्ट होती थी तब-तब मैंने अपने पतिदेव को भला बुरा कहा। वह चुपचाप सुन लिया करते थे, परन्तु मुझसे एकमत नहीं होते थे। इस तरह पांच साल बीत गये और एक दिन हमेशा की तरह मैं भड़क उठी और सास के बारे में उल्टा-सीधा कहने लगी। आखिर में धीरे से पतिदेव ने कहा "तुम काफ़ी बोल चुकी हो" तब मुझे उस क्षण में एहसास हुआ कि मैंने पिछले पांच सालों में अपने

अनुभव सागरपार से

पतिदेव और उनकी माँ को न जाने क्या कुछ कह डाला था। तब मैं सास से आन्तरिक क्षमा प्रार्थना {बौधिक सांगे} की। और अपने नकारात्मक भावनाओं को रोक सकी, मेरा दिल रोता है जब मैं सोचती हूँ कि अपने पतिदेव को उनके माँ के बारे में मैंने कितना भला-बुरा कहा है जो कि घर के काम के लिये कितना परिश्रम करती थी। अब मैं घर के काम में सासुजी का हाथ बंटाती हूँ और हम दोनों में अच्छा तालमेल है।

मैं खाना पकाती हूँ और मेरी सास बर्तन धोती हैं, कपड़े मैं धोती हूँ और सासुजी उन्हें सुखाने के लिये फैलाती हैं। अब हमारे परिवार के लोग प्रायः खुश रहते हैं। कभी कभी वे {सास} ज्यादा बोलती हैं तो मैं मन ही मन कह लेती हूँ ‘बूढ़ी औरत’।

मेरी जैसी औरत में भी कुछ विशेष बात है जो दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालती है, जो कि मेरे पतिदेव बातचीत के दौरान पहले भी बता चुके हैं; यह बात हमारे पड़ोस के हायाशी परिवार के बारे में है। हमारे दोनों परिवारों के सदस्यों के बीच अच्छी मित्रता है। हायाशी परिवार में एक अठाईस साल का बेटा है जो कि जन्म से ही न चल पाता है और न ही बोल सकता है। यह सब ‘मस्तिष्क के पक्षाघात’ के कारण हुआ है। उसका नाम है योशिओ। जब से योशिओ प्राथमिक विद्यालय {जो कि भिन्न रूप से सक्षम बच्चों के लिये है} में पढ़ता था मैं उसे गाड़ी से विद्यालय छोड़ आती थी और ले आती थी। उसकी माँ गाड़ी चलाना नहीं जानती थी, मैं इस तरह उनके इस काम को मेरे सास ससुर के आने से पांच साल पहले से ही करती थी और इस तरह पन्द्रह साल तक मैंने उसे विद्यालय पहुंचाने और लाने का कार्य किया। इन पन्द्रह सालों में मैं उसके लिये यत्न, उद्वेग और चिन्ता भी करती थी। सबसे पहले जब योशियो की माँ ने मुझे योशियो को विद्यालय पहुंचाने और ले आने के बारे में कहा तो मैं खुशी-खुशी सहायता करने को तैयार हो गई {कराई किमोचि दे} क्योंकि पहले भी मैंने कई बार उनकी सहायता की और मेरे बच्चे छोटे होने के कारण वह भी मेरे अनेक कामों में हाथ बंटाती थी। वैसे भी यदि आप प्रतिदिन कुछ करते हो तो आप खुश हमेशा नहीं होते हो। कभी कभी मैं सोचती थी मैं क्यों ऐसा करूँ और कितने दिनों तक करूँ?

“जब मैंने यह बातें सुनी तो मैं बहुत क्रोधित हुई और मैंने लज्जित भी महसूस किया। और जब मैं सूत्रपाठ के लिये अपने पारिवारिक पूजास्थल के समक्ष बैठी, मैंने अपनी सभी भावनाओं को अपने पूर्वजों पर केन्द्रित कर दिया।“

शायद उसे मेरी मन की बात समझ आती थी और मेरे हाथ को योशियो दबाकर मानो धन्यवाद जताता था। वह शायद बोलता होगा ‘हमेशा धन्यवाद, श्रीमती यामामोतो’ और मेरी ओर देखता था मानो कह रहा हो ‘आप मुझे इसी तरह भविष्य में भी गाड़ी चलाकर ले जाओगी न?’ और जब मैं उसका निष्पाप चेहरा देखती थी तो मैं बहुत शर्मिंदा होती थी और अपने को एक तुच्छ इंसान मानती थी। इधर कई लोग मेरे और योशियो के बारे में कानाफूसी करने लगे। एक ने कहा ‘‘उसे तो आप ले आती-जाती हो यदि कोई दुर्घटना हो गई तब क्या करोगी?’’ और एक ने तो कहा ‘‘तुम जरूर ऐसे ही बिना पैसे लेकर इसको विद्यालय ले जाना और ले आने का काम मुफ़्त में निःस्वार्थ होकर नहीं करती हो?’’ जब मैंने यह बातें सुनी तो मैं बहुत क्रोधित हो हुई और मैंने लज्जित भी महसूस किया। और जब मैं सूत्रपाठ के लिये अपने पारिवारिक पूजास्थल के समक्ष बैठी, मैंने अपनी सभी भावनाओं को अपने पूर्वजों पर केन्द्रित कर दिया।

मैंने अपने पूर्वजों से पूछा ‘‘क्यों मुझे ऐसा बोला जायेगा? क्या मैं कोई गलत काम कर रही हूँ।’’ परन्तु आखिर मेरा मन शान्त हो गया और मैं खुद से पूछने लगी ‘‘आखिर क्या मनोभाव और विचार है। यदि आप कुछ नहीं करना चाहते हो तो आप ‘ना’ कह सकते हो। यदि आप कुछ करना चाहते हो तो लोगों के कहने पर भी आप उसके लिये करोगे।’’ हाँ, मैं उसके लिये करना चाहती थी तो मैं गाड़ी उसके कारण चलाती थी, और इसी भावना को मन में दोहराते हुये मैं उसके लिये गाड़ी चलाने लगी। यह सब रेयूकाई की शिक्षा के कारण सम्भव हुआ। मेरे पतिदेव के माता-पिता के साथ रहने से मुझे रेयूकाई की शिक्षा को गम्भीरतापूर्वक लेकर काम में लाना आ गया।

इस शिक्षा से मैंने तीन बातें सीखी। पहली, दूसरों के दोष देखने से पहले अपनी गलती पहचानो; दूसरी, जब तुम कुछ करते हो सेवा की भावना से करो और ‘बौद्धिक’ सांगे {बौद्धिक तपस्या} के द्वारा; तीसरी, अपने को दूसरे की स्थिति में रखकर देखो। यह सब बातें बोलना बहुत आसान है, परन्तु व्यवहार में लाना बहुत कठिन। प्रतिदिन की जीवन यात्रा में यह बातें मैं रोज़ याद रखती हूँ।

मुझे पता नहीं मैं कब तक योशिओ की सेवा कर पाऊँगी, पर शरीर जब तक चलेगा मैं सेवा करूँगी। मैं, एक पवित्र और निष्पाप मन, जो कि योशियो का है, उसके करीब रहना चाहूँगी; और मैं अपने आप की प्रगति करूंगी। एक इंसान की हैसियत से और जिन्दगी के आखिरी मोड़ पर जाकर पीछे मुड़कर बोल सकूंगी ‘‘मेरी ज़िन्दगी आखिर बेकार नहीं थी।’’

– मासायो यामामोतो (42 वर्ष)
आइचि प्रांत, जापान

"दशम" रेयूकाई सम्मेलन २०१० का भव्य आयोजन

रेयुकाई द्वारा दसवां वार्षिक सम्मेलन गत 28 अगस्त 2010 को रेयुकाई बांग्लादेश डेवेलपमेंट सोसाइटी द्वारा टंगाइल, बांग्लादेश में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में चौथी शाखा के महाप्रबंधक माईकावा जी और विशेष अतिथियों के रूप में रेयूकाई भारत से जुन शिबुचो अरुण बनर्जी और रेयुकाई बांग्लादेश के संस्थापक जुन शिबुचो कालीदास राय मौजूद थे। रेयुकाई बांग्लादेश के अध्यक्ष ने इस अवसर पर समारोह का संचालन किया।

उत्सव के आरंभ में रेयुकाई परिवार के पूर्व वरिष्ठ सदस्यों को याद किया गया और विश्व शांति के लिए प्रार्थना की गई। सभी मौजूद सदस्यों ने चर्चा के दौरान बांग्लादेश में रेयुकाई की भावना, उद्देश्य और उसके प्रसार के बारे में विस्तार से चर्चा की। चर्चा में मौजूद प्रतिभागियों में बाबू राम प्रसाद साहा, बाबू गौतम चक्रवर्ती,

श्री बाबू बकाली, श्री उत्तम बकाली और श्री खोकन पाल जैसे व्यक्तित्व मौजूद थे।

रेयुकाई के होज़ाशु निर्मल सरकार ने विस्तार से चर्चा की कि कैसे रेयुकाई के कमलसूत्र के अभ्यास से समाज में शांति स्थापना कर व्यक्ति अपना जीवन सुधार सकता है।

तदुपरांत चौथी शाखा के महाप्रबंधक श्री माईकावा और बांग्लादेश शाखा के जुन शिबुचो कालीदास राय और अन्य सदस्यों की उपस्थिति में एक सोकाइम्यो स्थापित किया गया। साथ ही यह शिक्षा दी गई कि रेयुकाई के अभ्यास के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन हासिल किए जा सकते हैं।

इस समूचे उत्सव का आयोजन होज़ाशु गौतम चक्रवर्ती द्वारा किया गया। समारोह का समापन रात्रि भोज के साथ हुआ।

– रिपोर्टः डौली कर्माकर, बांगलादेश

अलीगढ़ (उ.प्र.) में नेत्र जाँच शिविर का सफल आयोजन

पूर्व सूचना के अनुसार दिनांक 27.2.2011 को प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक रेयूकाई यूनिट कार्यालय, बुद्ध विहार कालोनी, नगला कलार, लखीमपुर सूत मिल, खैर बाईपास रोड, निकट चोबासिंह इण्टर कालेज, अलीगढ़ में आंखों की जांच का शिविर आयोजित किया।

अलीगढ़ शहर के मशहूर डा. अंकुर सिंघल, सिंघल आई हास्पीटल, रामघाट रोड, अलीगढ़ के स्टाफ़ व मशीनरी की सेवाऐं ली गयी।

शिविर में 87 लोगों ने नेत्रजांच का लाभ उठाया, 27 व्यक्तियों को चश्मा लगाने की सलाह दी गई तथा उनको चश्मा बनवाने के लिए नम्बर भी दिये गये।

ग्यारह वरिष्ठ नागरिकों की मोतियाबिंद की जाँच भी निःशुल्क की गई और उनको दवाईयां भी दी गईं व कुछ लोगों को तीन माह बाद शल्य चिकित्सा से लैन्स डलवाने की सलाह दी गई।

आंखों की मुफ्त जांच के शिविर के लिये रेयूकाई शाखा को सराहा गया। सभी लोगों का चाय-नाश्ते से स्वागत किया गया। जांच स्टाफ को खाना, चाय व अल्पाहार के साथ उनको मैडल देकर सम्मानित किया गया।

शिबुचो जीतसिंह ने कार्यक्रम के अंत में सभी को धन्यवाद दिया।

– रिपोर्टः शिबुचो जीतसिंह बौद्ध, अलीगढ़

रेयुकाई समाचार

टंगाईल, बाँग्लादेश में चित्र कला प्रतियोगिता आयोजित

बांग्लादेश के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 26 मार्च 2011 को रेयुकाई शाखा बांग्लादेश ने बच्चों के लिये चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन करने का सफल प्रयास किया। टंगाईल ज़िले के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई।

स्थानीय यूनियन के अध्यक्ष शेख राहुल आमीन खोकन होज़ाशु बाबलु बोकाली ने समारोह के सफल आयोजन की सुविधा प्रदान की। प्रतियोगिता में विद्यालय के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम कक्षा के विद्यार्थी प्रतिभागी थे। इस प्रतियोगिता में कुल 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। समारोह का उद्घाटन माननीय अध्यक्ष ने किया। सर्वप्रथम बांग्लादेश के 1971 युद्ध के शहीदों की दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। जापान में सुनामी के कारण दिवंगत लोगों को स्मरण कर उनकी आत्मा की शांति के लिए भी प्रार्थना की।

रेयुकाई के आदर्श और उद्येश्य के बारे में जानकारी देते हुये श्री निर्मल कुमार कर्मकार ने स्वागत अभिभाषण दिया। श्री रामप्रसाद साहा, श्री गौतम चक्रवर्ती और खोकन चन्द्र पाल जैसे अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने भी अपने वक्तव्य सभा के सन्मुख प्रस्तुत किये।

रेयुकाई अभ्यास को माध्यम बनाकर और अपनाकर कैसे कोई भी स्वनिर्भर हो सकता है और राष्ट्र के गठन में सहायक हो सकता है, उसकी उन्नति के प्रति कार्य कर सकता है और विश्वभर में शांति का प्रसार कर सकता है, यही जून शिबोचो कालिदास राय ने बताया।

टंगाईल ज़िले के राजकीय प्राथमिक विद्यालय, जहां इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ, की मुख्य अध्यापिका श्रीमती स्मृति राणी साहा ने पुरस्कार वितरण किया। चित्रांकन प्रतियोगिता के 'क' और 'ख' विभाग के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

रेयुकाई बांग्लादेश के विभिन्न अधिकारियों ने अन्य प्रतिभागीयों को श्रीमती स्मृति राणी साहा द्वारा वितरण हेतु सांत्वना पुरस्कारों को प्रायोजित किया।

कार्यक्रम का समापन विशिष्ट व्यक्तियों के चायपान के साथ हुआ।

– रिपोर्टः निर्मल कुमार कर्माकर, बांगलादेश

मुजफ्फरपुर शाखा ने निबंध प्रतियोगिता आयोजित की

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था के तत्त्वावधान में लेख-प्रतियोगिता का आयोजन उच्च विद्यालय भगवानपुर, मुजफ्फरपुर स्कूल में हुआ। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 60 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आगत अतिथियों का स्वागत जुन शिबूचो अमित कुमार और संस्था के वरिष्ठ सदस्यों के साथ स्कूल के अधिकारियों ने फूल-माला पहनाकर किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. संजय पंकज, वरिष्ठ अतिथि, स्कूल के प्राचार्य रंजीत पटेल, डा. राजीव कुमार, श्री रंजीत श्रीवास्तव रहे।

मुख्य अतिथि डा. पंकज ने अपने उद्गार में कहा कि जहां संयुक्त परिवार एकता और मजबूती प्रदान करते हैं वहीं परिवार में बुर्जुगों का स्थान सबसे ऊपर होता है क्योंकि वह परिवार को अपने तजुर्बे से सही मार्गदर्शन करते हैं।

वरिष्ठ अतिथियों में डा. राजीव कुमार ने अपने विचारों में संयुक्त परिवार में बच्चों तथा युवा सदस्यों का महत्वपूर्ण तथा प्रथम पाठशाला होने की बात कही। वहीं श्री रंजीत श्रीवास्तव ने कहा कि यह सारी बातें अब छूटती जा रही हैं जिससे सामाजिक ढांचा चरमरा रहा है जो आने वाले समय के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। संस्था के माध्यम से ही सही एक अच्छी तथा सच्ची कोशिश हो रही है उसका हम स्वागत करते हैं।

संस्था के जुन शिबूचो श्यामल कुमार ने संयुक्त परिवार में बुजुर्गों को नींव का पत्थर माना है। उनके आदर्शों और अच्छे विचारों से परिवार को मजबूती तथा महत्वपूर्ण संबल मिलता है। वरिष्ठ अतिथियों में स्कूल के प्राचार्य तथा अन्य स्कूलों के प्रतिनिधि प्राचार्यों ने भी अपने सकारात्मक विचार प्रस्तुत किये।

यह लेख प्रतियोगिता दो विषय-खंडों में बांटी गई थी - पहले विषय खंड का विषय था 'परिवार में बुजुर्गों का महत्व' और दूसरे का विषय था 'संयुक्त परिवार का महत्व'। पहले खंड की प्रतियोगिता में पहले स्थान पर शिवम कुमार, दूसरे स्थान पर उज्जवल कुमार तथा तीसरे स्थान पर रोहित रहे। दूसरे खंड में प्रथम स्थान पर अभिनव कुमार, द्वितीय स्थान पर पंकज कुमार तथा तीसरे स्थान पर धर्मेन्द्र कुमार रहे। वहीं भाषिक शुद्धियों की शुद्धता पर कुन्दन कुमार को सम्मानित किया गया। निबंध की मौलिकता पर कुंदन कुमार द्वितीय को सम्मानित किया गया। निबंध में संवोधात्मकता का अच्छा प्रयास करने के लिए जुगुनु कुमारी को सम्मानित किया गया, वहीं दोनों विषय खंडों में सांत्वना पुरस्कार तीस बच्चों को अलग-अलग दिये गये। लेख प्रतियोगिता में शामिल सभी बच्चों को मोमेंटो और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित कियाा गया।

धन्यवाद ज्ञापन संस्था के वरिष्ठ सदस्य अमित कुमार ने किया। अपने धन्यवाद में अंतर्रात्मा से कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि विश्व-बंधुत्व का समाज तभी स्थापित हो सकता है जब परिवार बिखरे नहीं और परिवार में वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान होगा। साथ-साथ वरिष्ठ विद्वानों का स्कूल प्रशासन का तथा लेख प्रतियोगिता में भाग लिये बच्चों और अपने संस्था के सदस्यों को भी धन्यवाद दिया।

उपस्थित सदस्यों में सुनील कुमार प्रिय, राजा, अविनाश बिहारी, सुभाष पांडे, राकेश कुमार, प्रवीण कुमार, समीर कुमार, रामायण कुमार, पंकज कर्ण, संजीव कुमार, अद्यानंद चौधरी, अनेहस शाश्वत, सिद्धार्थ, सुजीत कुमार भारती प्रमुख रहे।

अन्त में जापान में आये प्राकृतिक आपदा से व्यथित जापान के लोगों के लिए संस्था के सदस्यों के साथ उपस्थित सभी विद्वत्जनों ने अन्तर्रात्मा से गहरी संवेदना प्रकट की। उपस्थित विद्वानों ने माना कि जापान में भयानक विभीषिका के कारण वहां के नागरिकों को जो अपार कष्ट तथा प्राकृतिक प्रकोप का सामना करना पड़ रहा है उससे वह जल्दी ही उबर जायेंगे। हम लोग परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि जापान के लोगों को कष्ट सहने की और उससे जल्द से जल्द बाहर निकलने की शक्ति प्रदान करें।

- रिपोर्टः जुन शिबूचो श्यामल कुमार

रेयूकाई द्वारा वाराणसी में परिवार दिवस का आयोजन

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था की ओर से दिनांक 01.04.2011 को वाराणसी की पवित्र धरती पर परिवार दिवस का भव्य आयोजन किया गया। सारनाथ स्थित पर्यटक आवास गृह के सभागार में अपराह्न 2:00 बजे से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

इस आयोजन में रेयूकाई आठवीं शाखा जापान के श्री तोमोत्सुगु मासुनागा मुख्य अतिथि के रूप में जापान के ही श्री मासारू मियाची तथा नई दिल्ली मुख्यालय के श्री एन. एस. रावत अतिथि के रूप में सुशोभित हुए और समारोह में शामिल होकर सदस्यों के बीच बहुमूल्य शब्दों से लोगों को आलोकित किया। बच्चे, युवा, महिलाएं एवं बुजुर्ग आपसी स्नेह, प्यार और अपनत्व दर्शाते हुए परिवार दिवस के इस आयोजन में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ 'ओदाईमोकु' अर्थात 'नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो' एवं तत्पश्चात राष्ट्रगान से हुआ। प्रेम कुमार गिरी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समारोह में जापान, नई दिल्ली, पटना तथा वाराणसी के सभी क्षेत्रों से आए सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने श्रोताओं से रेयूकाई की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने का आग्रह करते हुए संस्था से जुड़ने के बाद अपने आप में आए परिवर्तन को सद्भावपूर्ण तरीके से व्यक्त किया।

पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार मुख्य अतिथि श्री तोमोत्सुगु मासुनागा ने अपने सम्बोधन में सर्वप्रथम अपना परिचय दिया। उन्होंने पूवजों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया, क्योंकि हमारे पूर्वज हमें परलोक में रहकर भी देखते हैं और हमें संरक्षण प्रदान करते हैं। उनका स्मरण करने से हमें खुशियां प्राप्त होंगी और हम सुखी एवं सम्पन्न हो जाएंगे। जब हम किसी को मदद पहुँचाते हैं तो हमें भी कोई मदद पहुँचाएगा, इसलिए हमें सदा समाज और समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करना चाहिये। किसी भी धर्म के मानने वाले लोग संस्था के सदस्य बन सकते हैं, चाहे हिंदू हो, मुसलमान हो या सिख-ईसाई हो। उन्होंने विश्व-शांति और विश्व-बन्धुत्व हेतु प्रेम और शांति के मार्ग के अनुसरण पर बल दिया तथा अरूणाचल प्रदेश के ऊपर चीन के दबाव की चर्चा की। उन्होंने सदस्यों को रेयूकाई सदस्य होने पर बधाई भी दी।

श्री मासारू मियाची ने उनके जापानी उद्बोधन का अंग्रेज़ी भाषा में एवं श्री एन. एस. रावत ने हिंदी भाषा में अनुवाद कर आगंतुक श्रोताओं को जापानी मेहमान के उद्गारों से अवगत कराया। इसी क्रम में महाबोधि इण्टर कालेज, सारनाथ के पूर्व प्राचार्य श्री पी. सी. मिश्र ने अपने वक्तव्य में श्री मासुनागा के विचारों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि माननीय अतिथि महोदय द्वारा 'पूर्वज स्मरण', 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' तथा 'वसुदैव कुटुम्बकम' आदि सिद्धांतों की चर्चा करना हमारी ही परम्परा और सभ्यता के अनुकूल है। सारनाथ सभासद सदस्य छोटेलाल मौर्य ने अपने भाषण में कहा कि शाक्यमुनि बुद्ध की धरती पर जापान से आये अतिथियों का स्वागत है। अधिक से अधिक लोग रेयूकाई सदस्य बनें, मैं इसके प्रति प्रयत्न एवं सहयोग करूँगा। पटना से पधारे पंकज पाठक ने अपने वक्तव्य में लोगों से समाज की बेहतरी तथा स्वयं की अच्छाई के लिए सूत्रपाठ के महत्व पर बल दिया।

अन्नपूर्णा गोस्वामी ने अंग्रेज़ी भाषा में दिए अपने भाषण में अपने विचार व्यक्त किए जिसे श्रोताओं ने बेहद सराहा। मनीषा पांडेय ने भी अपनी बातों को सजग एवं भावपूर्ण अंदाज़ में रखा और बताया कि इस तरह से संस्था से हमें जीवन में अच्छी सीख मिलती है। आज माता-पिता और बुजुर्गों का सम्मान करने की आवश्यक्ता है। समारोह के अंतर्गत आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में सफ़ल बच्चों के बीच श्री मासुनागा ने पुरूस्कार वितरण कर उन्हें प्रोत्साहन दिया। इस आयोजन के अंत में लार्ड बुद्धा इंगलिश स्कूल, सारनाथ के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से जयन्ती गोस्वामी, शिवम कुमार, अन्नपूर्णा सहित अन्य छात्रों ने अपनी-अपनी प्रस्तुति द्वारा दर्शकों को आनन्दित किया।

इस समारोह को सफ़ल बनाने में सदस्य सर्वश्री प्रमोद कुमार निगम, चन्द्रमोहन मिश्र, डा. प्रकाश, राजेन्द्र प्रसाद सिंह उर्फ़ महादेव, लखन राजपूत, विरेन्द्र मौर्य, जितेन्द्र प्रजापति, बबलू कुमार (शिक्षक), धनेश कुमार गुप्ता, उमाशंकर साव, गनेश राजभर, रामजी जायसवाल, सुरेन्द्र कुमार भारद्वाज, सर्वेश त्रिपाठी एवं पूर्णानन्द गिरी ने अपना-अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

इलैक्ट्रानिक्स एवं प्रिंट मीडिया के लोगों ने भी समारोह को प्रसारित व प्रकाशित कर सहयोग प्रदान किया तथा 'संस्था' के संदेश को जन-सामान्य तक पहुँचा कर सहायता प्रदान की।

– रिपोर्टः सरस्वती गिरी

रेयुकाई समाचार

हिरोताका नाकाजीमा द्वारा कोलकाता शाखा का दौरा

भारत, श्रीलंका और फिलिपीन्स रेयूकाई के आवासीय निदेशक श्री हिरोताका नाकाजीमा भारत के विभिन्न प्रदेशों का परिदर्शन करके 25 अगस्त 2010 को कलकत्ता पधारे और एक विशाल जनसभा में सम्मिलित हुए। रेयूकाई के उपनिदेशक और आध्यात्मिक सहचर्य संस्था के मुख्यालय के संचालक श्री एन. एस. रावत उनके साथ आये। कलकत्ता में 8वीं शाखा के उद्बोधन के पश्चात यह उनकी प्रथम यात्रा थी इसलिये कलकत्ता के 8वीं शाखा के सदस्यों में काफी उत्साह देखने को मिला। पहले दिन में ही दफ्तर के कामकाज, सुविधा-असुविधा और भविष्य में कार्यसूची के बारे में कलकत्ता कार्यालय के प्रधान एवं वरिष्ठ सदस्य अमलेश दासगुप्ता और होज़ाशु आशीष गोस्वामी के बीच दीर्घ समय तक वार्तालाप हुआ।

श्री नाकाजीमा के आगमन के उपलक्ष्य में हर महीने सूत्रपाठ का दिन महीने के आखिरी रविवार की जगह पहले ही मना लिया गया। जिसके लिये 26 अगस्त को सदस्यों को एकत्रित होने को कहा गया। उस दिन सूत्रपाठ किया कलकत्ता कार्यालय के कर्मचारी व सदस्य काकोलि घोष माईति और समारोह का परिचालना किया वरिष्ठ सदस्य अमलेश दासगुप्ता ने, इसके बाद जापान से लौटे होज़ाशु आशीष गोस्वामी ने अपनी जापान यात्रा और लीडरशिप ट्रेनिंग कैम्प के तुर्जबे के बारे में बताया। रेयूकाई लीडरशिप किसको कहते हैं? अच्छे इंसान बनने के क्या प्रयोजन हैं? यह अपना अभिज्ञता से बताया। इस प्रशिक्षण में प्रतिदिन सूत्रपाठ करना मानसिक व शारीरिक विकास का सहायक है यह बताया। इस प्रशिक्षण की विशेष शिक्षा थी शिचिमेंजान पर्वत शिखर का आरोहण। उन्होंने इस यात्रा के दौरान अनुभव किया कि किस तरह एक इंसान को दूसरे इंसान का साथ देना चाहिये। सच्चे अभिभावक जैसे व्यवहार करना और विश्वस्त होकर दूसरों पर उपकार करना चाहिये, जो सदस्यों ने शिविर में किया, उनको अभिभूत किया या मुग्ध किया।

इण्डोनेशिया, फिलिपीन्स, भूटान और भारत के विभिन्न प्रांतों के करीब चार हजार लोगों ने इस समवेत सफर में भाग लिया। इस सफर के दौरान कठिनाईयों का और अस्वस्थ होने का सामना सब लोगों ने मिलकर किया और अतिक्रम किया। यात्री सदस्यों की यह प्रचेष्टा उनको हमेशा याद रहेगी यह अशीष ने बताया।

इस सम्वाद के संदर्भ में अनेक प्रश्नोत्तर और विचारों का विवेचन हुआ। इस सम्वाद में डा. मधुमिता मुखर्जी, कृष्णा राय, गोपाल बोस ने भाग लिया।

इसके बाद श्री नाकाजीमा ने सदस्यों के अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया, विशेषतः रेयूकाई और सदस्यों का क्या कर्म है, क्या उनका उद्देश्य है इस विषय में सहज और विषद रूप से बताया। श्री नाकाजीमा से विभिन्न विषयों में श्री रणधीश चौधरी, श्री नाजमुल हाक, श्री छान्दसिक गुहा और अन्य लोगों ने जानना चाहा।

कलकत्ता के सदस्यों की ओर से श्री नाकाजीमा और श्री रावत को कलकत्ता के विख्यात चित्रकार की कृतियां सुमित्रा चटर्जी ने भेंट कीं। सभा की समाप्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुई। कार्यक्रम में दीपेन महाचार्य, मेरी मुखर्जी, नाजमुल हक और श्वती सेनगुप्ता ने भाग लिया। कलकत्ता के 8वीं शाखा की ओर से दोनों अतिथियों और उपस्थित सदस्यों को सदस्य प्रदीप राय ने धन्यवाद दिया। उस दिन सभा में कुल चालीस सदस्य उपस्थित थे।

– रिपोर्टः आशीष गोस्वामी, कोलकाता

सारनाथ वाराणसी में विशाल आमसभा आयोजित

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था शाखा सारनाथ, वाराणसी द्वारा "शाक्यमुनि बुद्ध" की प्रथम उपदेश स्थली सारनाथ, उत्तर प्रदेश में दिनांक 25 जनवरी 2011 को बुद्ध इण्टरनेशनल स्कूल, निकट अग्रवाल सभागार में एक विशाल आम सभा का आयोजन किया गया।

आयोजित सभा में जापान से रेयूकाई 8वीं शाखा के श्री मासारू मियाची अतिथि के रूप में पधारे तथा पटना से श्री पंकज पाठक और नई दिल्ली से श्री अश्विनी पाठक जी शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ शाखा संचालक श्री प्रेम कुमार गिरि ने दीप प्रज्जवलित कर किया। सर्वप्रथम सभी लोगों ने एक साथ "नमो म्यो-हो-रें-गे-क्यो" अर्थात् ओदाइमोकु का जाप व चैटिंग कर सूत्रपाठ का अभ्यास किया गया।

इस अवसर पर श्री मासारू मियाची के दिशा निर्देशन में बारी-बारी से सभी लोगों ने अपना-अपना परिचय दिया तथा कहा कि रेयूकाई से जुड़कर परिवार तथा समाज में खुशहाली का माहौल स्थापित हो सकेगा और उन्हें सदस्य बनकर अपूर्व खुशी मिलती है; उन्होंने अन्य लोगों को भी जोड़ने का संकल्प लिया। इस प्रकार शांतिपूर्वक सभी ने एक दूसरे की बातों को सुना। सदस्यों ने, बैठकों के लिए कार्यालय व अन्य स्थानों की तरह यहां भी प्रतियोगिता का आयोजन तथा चिकित्सा शिविर लगाने की इच्छा से अवगत कराया। इसी क्रम में प्रेम कुमार गिरि ने अपने संक्षिप्त उद्गार व्यक्त किये, उन्होंने सभी सदस्यों को समय पर पहुंचकर कार्यक्रम में अपने विचार रखने के लिए स्वागत व अभिनन्दन किया। उन्होंने लोगों को रेयूकाई के नियमों को अपने दिनचर्या में अपनाने तथा माता-पिता अन्य सभी पूर्वजों का हृदय से स्मरण करने के लिए प्रेरित किया, जिन्होंने अमूल्य जीवन हमें प्रदान किया है, अच्छे समाज की स्थापना ही रेयूकाई का उद्येश्य है। एक ऐसा समाज जिससे हम गर्व से अपने भावी पीढ़ियों को सौंप सकें। पंकज पाठक ने सोकाईम्यो के महत्व पर बोलते हुए कहा, 'यह पूर्वजों का प्रतीक चिन्ह है, जिसके सामने चैटिंग करने से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है' और जू-जू माला के बारे में विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया।

कार्यक्रम के मध्य में नवम वर्ग की छात्रा सिमरन मौर्य ने अध्यात्मिक सहचर्य संस्था व पूर्वज स्मरण पर आधारित गीत को प्रस्तुत कर लोगों को प्रभावित किया, उनके गीत सुनकर लोग भाव-विभोर हो गये तथा तालियाँ बजाकर उत्साहवर्धन किया।

श्री मासारू मियाची के बातों को लोग धैर्यपूर्वक सुनते रहे, वे विस्तारपूर्वक अंग्रेजी भाषा में बोल रहे थे, जिसका अनुवाद हिन्दी में अश्वनी पाठक ने किया, उन्होंने कहा कि वे जापान के ओसाका से आये हैं और आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई। रेयूकाई की स्थापना तथा इसके विस्तार के बारे में और पूर्वजों के साथ अपने सम्बन्धों के बारे में स्पष्ट जानकारी दी। श्री मियाची के अनुसार हमारा मन आत्मा को स्वीकार करता है और हमारी प्रकृति जीवन शैली को प्रभावित करती है, हमारे अपने हजारों पूर्वज हैं, जिसका उन्होंने गणना करके बताया। हिरोशिमा व नागासाकी जैसी विध्वंसक दर्दनाक घटनाओं का उल्लेख किया। विश्वशांति व विश्वबंधुत्व पर आधारित दृष्टिकोण उजागर कर क्रोध, घृणा, द्वेष, हिंसा को त्यागकर क्षमा, दया, प्रेम, अंहिसा को अपना कर सभी से आपसी भाईचारा व समन्वय को अपना कर साकारात्मक व खुशहाल समाज की आवश्यकता पर जोर दिया।

प्रधानाचार्य, महोबोधी प्राईमरी स्कूल के श्री विवेक स्वरूप गोस्वामी ने भी विचार रखे, इस कार्यक्रम में श्री छोटेलाल मौर्य, डा. प्रकाश, श्री जीतेन्द्र प्रजापति, श्री धनेश गुप्ता, श्री बबलू कुमार {शिक्षक}, कुमारी मनीषा पाण्डेय, अन्नपूर्णा गोस्वामी, श्री प्रमोद निगम एवं श्री पूर्णानन्द गिरि आदि ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

अंत में श्रीमती सरस्वती गिरि ने उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन दिया और कहा कि रेयूकाई की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की आज के परिवेश में बहुत आवश्यकता है, रेयूकाई के सदस्यों की संख्या बढ़ी है, जिसकी झलक यहां दिखाई दे रही है। भविष्य में भी सहयोग प्रदान करे, यही सभी से आकांक्षा है।

– रिपोर्टः सरस्वती गिरि

गया में होली मिलन

दिनांक 13.03.2011 रविवार का दिन आध्यात्मिक सहचर्य संस्था के गया के सदस्यों के लिये बड़ा ही आनन्दमय और ऊर्जावर्धक दिन था क्योंकि इस दिन सदस्यों ने होली मिलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कुल 30 सदस्यों ने अपनी उपस्थिती दर्ज कराई। इस कार्यक्रम की शुरूआत ओदाइमोकु से हुई और सभी सदस्यों ने स्वपरिचय दिया। तत्पश्चात संस्था के कार्य एवं उद्येश्यों की जानकारी वरिष्ठ सदस्य शिवकुमार शर्मा ने दी। उन्होंने लोगों को यह बताया कि होली एक पावन पर्व है इसे पावन रूप से ही मनायें। इस पावन अवसर पर आपसी मतभेद को भुलाकर एक दूसरे से आन्तरिक मिलन का प्रयास करें। यही होली तथा रेयूकाई का मूलमंत्र है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने का श्रेय गुंजन कुमार मिश्रा, ओमप्रकाश, ब्रजेश कुमार तथा कमलेश महतो को प्राप्य है।

– रिपोर्टः शिव कुमार शर्मा, 24वीं शाखा, गया

कोलकाता में परिवार दिवस का भव्य आयोजन

रेयूकाई 8वीं शाखा कलकत्ता कार्यालय के द्वारा 6 मार्च 2011, रविवार को तीसरा परिवार दिवस बहुत उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न स्तर के लोग अपने परिवार के सदस्यों के संग दिनभर उपस्थित रहे। जो लोग इस प्रतिष्ठान के साथ युक्त और इसके शुभचिंतक थे उन्हीं की उपस्थिति में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम ने जनसमारोह को सार्थक और तात्पर्यपूर्ण किया।

सुबह 10 बजे कार्यक्रम के पूर्व कलकत्ता कार्यालय के उपासना कक्ष में निष्ठा के साथ सभी सदस्यों ने पूर्वजों को स्मरण कर 'कमल सूत्र' का पाठ किया। इसके बाद सदस्या काकोलि घोष माईति ने सूत्रपाठ से कार्यक्रम का परिचालन किया।

तदोपरांत वरिष्ठ सदस्य अमलेश दास गुप्ता ने विशिष्ट आमंत्रित व्यक्तियों और नये सदस्यों के सामने कार्यक्रम के उद्देश्य और तात्पर्य का व्याख्यान किया।

सबके साथ भाईचारा और मैत्री स्थापना करना ही परिवार दिवस का लक्ष्य बताया गया। उपस्थित 130 नये और पुराने सदस्यों के साथ इस विषय पर विचार-विमर्ष व वाद-संवाद हुआ।

विशिष्ट कवि और सदस्य शिवशिस दत्त द्वारा बच्चों के लिये लिखी कविता और नाट्क बच्चों ने मंचन किया जिसने मन को स्पर्श किया। कार्यक्रम को जारी रखते हुए सदस्या शाश्वती सेन गुप्ता ने सुरीले संगीत से दर्शकों को सराबोर किया।

श्रीमती काकोलि, हीरा हक और अरून्धुती महक ने कविता पाठ पढ़कर उपस्थित सदस्यों के मन को स्पर्श किया।

इसके बाद विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें पश्चिम बंगाल सरकार के पूर्वमंत्री और संस्था के सदस्य अध्यापक प्रबोध चन्द्र सिन्हा, विशिष्ट शिक्षाविद् डा. प्रभावती दास और समाजसेवी श्रीमती कृष्णा राय उपस्थित थे।

अध्यापक प्रबोधचन्द्र सिन्हा ने कहा 'विश्व भर में भोगी लोग सामाजिक इंसान को स्वार्थी और समाज से अलग रहने के मनोभाव की ओर प्रेरित कर रहे हैं। विश्व को जब ऐसे स्वार्थी लोग अस्थिर, अशांत और असहाय बना रहे हैं, तब परिवार दिवस के यथार्थ अर्थ की वृद्धि करना हमारा प्रायोजन है। डा. प्रभाती दास ने परिवार दिवस के अर्थ की व्याख्या करते हुये इतिहास में गोष्ठीबद्ध इंसानों के श्रृंखलाबद्ध होने के बारे में बताया।

कृष्णाराय ने समाज में हर श्रेणी के लोगों को एकता और भाईचारे को बनाये रखने के बारे में कहा, उन्होंने संस्कृत की उक्ति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की व्याख्या करते हुये कहा कि सारी दुनिया के सब लोगों को अपना समझना चाहिये।

इसके बाद संगीत का कार्यक्रम शुरू हुआ। प्रख्यात लोकगीत के शिल्पी और संगीत परिचालक अभिजीत बोस, विख्यात लोकगीत गायक नाजसुल हक, दीपेन महाचार्य, गायक अमित गुहा, शिल्पी सम्राट चक्रवर्ती आदि ने एकल एवं सम्मिलित गीत गाकर सब लोगों को मोहित किया।

संस्था के सदस्य छान्दसिक गुहा ने इस समारोह का परिचालना किया। सदस्य मिलन दास, सत्यजीत मंडल, दिपाली भट्ट और कार्यालय के निकट आवासिक विक्रमादित्य राय और अन्य लोगों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

इसके बाद अपराह्न भोज में सब सदस्यों और परिवार के लोगों ने एक साथ भाग लिया। दिन भर का यह कार्यक्रम अमित गुहा के एकल संगीत के साथ समाप्त हुआ। 'हम एक हैं' यह विचारधारा प्रत्येक इंसान अनुभव करे यह भावना लेकर परिवार दिवस की समाप्ति हुई।

– रिपोर्टः सिबाब्रत बोसु, कोलकाता

नीलसूत्र, एक परिचय

नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो

संस्कृत शब्द सूत्र का अर्थ है विभिन्न धर्मों का सैद्धान्तिक पृष्ठ। शाक्यमुनि बुद्ध के निर्वाण के बाद उनके शिष्यों ने उनकी शिक्षाओं के संग्रह को सूत्र का नाम दिया। इसी संग्रह में से एक सूत्र है - कमल सूत्र।

बुद्ध की शिक्षाओं के संग्रह में काफ़ी सूत्र हैं और रेयूकाई का नील सूत्र, कमल सूत्र पर आधारित है जो अमितार्थ सूत्र, समन्तभद्रबोधिसत्व धर्मध्यानचर्या सूत्र से मिलकर बना है।

रेयूकाई के संस्थापक श्री काकूतारो कूबो ने अपना ध्यान नील सूत्र पर केंद्रित किया क्योंकि ये हमें ठोस शब्दों में बुद्ध की शिक्षाओं को अपने प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करना सिखाता है। इसे हम बोधिसत्त्व अभ्यास कहते हैं। श्री काकूतारो कूबो ने श्रीमती किमी कोतानी के साथ कमल सूत्र की शिक्षाओं का अभ्यास किया व इस अभ्यास के परिणामतः बल दिया कि इन शिक्षाओं से व्यक्ति सच्चा सुख प्राप्त कर पारिवारिक व सामाजिक शांति का निर्माण कर सकता है।

रेयूकाई के सदस्य नील सूत्र का पाठ अपने बोधिसत्त्व अभ्यास का भाग तथा पूर्वज स्मरण, जो हमारे जीवन के स्रोत हैं, के निहित करते हैं। नील सूत्र के आरंभिक भाग को परिणामना कहते हैं तथा अंतिम भाग को प्रार्थना का नाम दिया गया है। इन दो भागों के कारण ही हमारे दोनों स्वर्गीय सस्थापकों ने नील सूत्र के निर्माण के अथक प्रयासों को सम्भव बनाया। परिणामना में हम सूत्रपाठ से आर्जित सद्गुणों को अपने पूर्वजों व उन करूणात्मों जिनका हम से सम्बन्ध था को अर्पण करने के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि वह बुद्ध के संसार को प्राप्त करें। जबकि प्रार्थना में हम स्वयं के लिए परम सत्य को प्राप्त करने के प्रयत्नों को सम्भव बनाने के लिए संकल्प करते हैं। अतः नील सूत्र का पाठ हम रेयूकाई सदस्यों को सही राह पर चलने को प्रेरित करता हैं।

नील सूत्र का आधारिक नाम 'नामु-म्योहोरेंगे-क्यो', 'असायु-नो-ओत्सुतोमें' जिसका अनुवाद है कि मैं अपने आपको सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र को अर्पण करता हूं व प्रातः और सायं इसका पाठ अपना कर्तव्य समझकर करूंगा। यद्यपि इस प्रश्न का कोई सशक्त उतर नहीं है कि हम इसे नील सूत्र क्यों कहते हैं। एक कारण है कि वाक्य भसारा जगत सद्धर्म की शरण में आ जाता है का नील सूत्र में उपस्थित होना। वाक्य में एक आसमान व भचार समुद्र शब्दों का प्रयोग सम्पूर्ण जगत को दर्शाता है। सूत्र शब्द सम्भवतः नीले आसमान या नीले समुद्र से लिया गया है। दूसरे नज़रिए के अनुसार हम इसे नील सूत्र इसलिए कहते हैं क्योंकि इसे नीले कागज़ पर छापा जाता है।

हमारे संस्थापकों के अनुसार हमें नील सूत्र का पाठ अपने अन्तःकरण से करना चाहिए। हालांकि पाठ हम मन में भी कर सकते हैं परंतु हम अपना अभ्यास अपने ज्ञान व अन्तःकरण के विकास के लिए करते हैं। इसके लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हमें अपने समस्त अस्तित्व को शिक्षाओं, जो सूत्र हमें प्रदान करता है, के साथ अपने शरीर की गहराई तक प्रवेश कराना पड़ेगा। सूत्रपाठ को हम तेज़ बोलकर भी कर सकते हैं।

नील सूत्र का पाठ स्वयं को देखने के नए तरीकों की खोज करता है साथ में हमारे समझने के स्तर को भी नया नज़रिया देता है।

हमें सदा नील सूत्र, जिसने इस अद्भुत अनुभव को सम्भव बनाया, को सम्मान तथा सावधानी से रखना चाहिए। नील सूत्र के प्रयोग के समय हाथों को स्वच्छ होना चाहिए तथा प्रयोग ना होने के वक्त सूत्र को उपयुक्त स्थान पर रखना चाहिए। हम सदस्यों का कर्तव्य है कि प्रतिदिन हमें व्यक्तिगत अभ्यास से दो बार प्रातः व सायं नील सूत्र का पाठ करना चाहिए। प्रातः में हमें यह पूरे दिन के लिए तैयार करता है व सायं में यह हमें पूरे दिन के सभी कार्यो का आंकलन करने का मौका देता है। नील सूत्र के सम्पूर्ण पाठ में 30 मिनट लगते हैं।

उपदेश व कार्यक्रम संवर्धन समिति अध्यक्ष का स्तंभ

हम एक हैं के पिछले संस्करण में जो मैंने लिखा उसे जारी रखते हुए मैं इस बात पर बल देना चाहूँगा कि जब सदस्य अपने जीवन की उन अवस्थाओं को पहचान लें जब वो स्वयं को रेयूकाई सदस्य के रूप में देखते हैं, तब उन्हें रेयूकाई अभ्यास में प्रयुक्त कुछ प्रणालियों की जानकारी होनी आवश्यक है। इस संस्करण में मैं उन में से किन्हीं विशेष के विषय में चर्चा करूँगा।

बोधिसत्त्व - वह व्यक्ति जो शाक्यमुनी बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित स्व-उन्नति व स्वविकास की जीवनशैली अपनाने के प्रति चिंतनशील है व अन्य व्यक्तियों को भी अपने लिये ऐसी ही उपलब्धि के लिये प्रेरित करता है।

कर्म - कर्म का संस्कृत में मूलभूत अर्थ है कार्य, किंतु अब इसका निहित अर्थ है कार्यों का परिणाम, अथवा, सटीक तौर पर कहें तो जीवन-सम्बंधित कार्यों का परिणाम। कर्म तब केवल किसी एक कार्य तक सीमित नहीं अपितु उस कार्य द्वारा होने वाले सभी बाह्य एवं आंतरिक अप्रत्यक्ष प्रभावों का प्रतीक है।

नेंगान - जब कोई व्यक्ति किसी लक्ष्य की अवधारणा कर लेता है, तब वह उसे प्राप्त करने की ठान लेता है, तथा लक्ष्य की प्राप्ति होने तक इस भावना को दृढ़ता से निभाने का प्रण करता है। इस संकल्प को नेंगान कहते हैं।

सांगे - सांगे का अर्थ है स्वआचरण में सुधार, अपने में कहीं कुछ अनुपयुक्त है या कोई अभाव है इसकी पहचान, एवं उस पहलू के निवारण के प्रति कार्य।

श्रीमती किमी कोतानी

के विचार

आप सूत्रपाठ स्वसुधार के लिए करते हैं किसी दूसरे व्यक्ति के लिए नहीं। सूत्र में बुद्ध ने हमें शिक्षा दी है कि यह सूत्र विक्षिप्त मन वाले मनुष्य में ध्यानयोग द्वारा स्थिर प्राप्ति की भावना जागृत करता है और हर बात को काटने की प्रवृति वाले मनुष्य में ज्ञान की भावना जागृत करता है।

जब आप दोनों हाथ जोड़कर अपने पूजाघर के सामने हर प्रातः व सांय प्रार्थना की मुद्रा में बैठ्ते हैं, तब आप अपनी समस्या के मूल कारण को पहचान कर विचार करते हैं कि अरे! ये तो यह कारण था। परंतु ऐसे विचारों को एक तरफ रखकर आमतौर पर लोग यह सोचते हैं कि झगड़े में हार जाने में कोई आनन्द नहीं है। कुछ भी हो जाए परंतु मैं झगड़े में हारूंगा नहीं, चाहे वह मेरे और मेरे पति या पत्नी के बीच ही क्यों ना हो। हालांकि जीवन के प्रति इस रूख से आपके सभी सद्गुण लुप्त हो जाएंगे।

सर्वप्रथम, हमें अपने पूर्वजों का आदर व सत्कार करना चाहिए। अपने जीवनसाथी को पूरा सम्मान देना चाहिए और आपकी सासू माँ चाहे कितनी भी निर्बल और अस्वच्छ क्यों ना हो, एक बहु को सदैव उनका सम्मान करना चाहिए। यदि आप बड़ों के प्रति नम्र हैं तो आपके परिवार में सुख व शांति का वास अवश्य होगा। यही प्रकृति का नियम है।

रेयुकाई अतुल्नीय कैसे है ?

वर्तमान समय में अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे युवाओं का घर से भाग जाना, किशोरों का अपराधों में लिप्त होना, तथा विवाह विच्छेद आदि। 'पारिवारिक सम्बंध' के विषय पर अधिक गम्भीरता से विचार करने की आवश्यक्ता है। क्या स्वाधीनता एवं मर्यादाओं के विरोध के कारण पारिवारिक सम्बंधों ने व्यक्तिगत स्वाधीनता पर अंकुश लगा दिया है?

हम, रेयूकाई के सदस्य, यह मानते हैं कि हमें 'परिवार' के सम्बंध में और अधिक विचार की आवश्यक्ता है। परिवार की नींव उस दिन रखी जाती है जब एक स्त्री-पुरूष एक शिशु को इस संसार में लाते हैं। इस से 'जीवन प्रवाह' का आरम्भ होता है, जिसमें जीवन की अन्य भावनाएं जैसे हर्ष और क्रोध सम्मिलित हैं।

एक संतुष्ट जीवन जीने के लिये, यह आवश्यक है कि हम 'जीवन प्रवाह' पर अपना ध्यान केंद्रित करें। हमें स्वयं को सही प्रकार से व सकारात्मक ढंग से समझना चाहिये साथ ही हमें विभिन्न समस्याओं का समूल निदान करना चाहिये। यह भावनाएं हमें निजी अनुभवों द्वारा प्राप्त होती हैं।

रेयूकाई नवम्बर के द्वितीय रविवार को 'परिवार दिवस' के रूप में मनाने की समर्थक है। यह भावना उपरोक्त विचारों पर आधारित है और रेयूकाई 'जीवन प्रवाह पर अपना ध्यान केन्द्रित' करने का लोगों से आह्वान करती है।

आओ जापानी सीखें - ३०

सामान्य बातचीत

मिचि नो हूबू ओ किकिमास (पथ निर्देश पूछते हुए)

मिचि नि मायोइमाशिता....................मैं रास्ता भूल गया हूँ।
चिज़ु ओ काइते इतादाकेमास का....................क्या आप मेरे लिये एक मानचित्र बना सकते हैं।
कोनो चिज़ु देवा गेनज़ाइचि वा दोको नि अरिमास का....................इस मानचित्र पर मैं अभी कहाँ हूँ?
अमेरिका ताइशिकान मादे दोनो यू नि इकु नो का ओशिएते कुरेमास का......क्या आप मुझे अमरीकी दूतावास पहुंचने का मार्ग बता सकते हैं?
कोनो चिकाकु नि चिकातेत्सु नो एकि वा अरिमास का....................क्या आसपास कोई मेट्रो स्टेशन है?
---- एकि वा दोनो यू नि इत्तारा ई देस का....................---- स्टेशन पर मैं कैसे पहुंच सकता हूँ?
उएनो नो हाकुबुत्सुकान वा दोचिरा नो मिचि देस का....................उएनो संग्रहालय जाने का कौन सा मार्ग है?
एकि नि चिकाइ देस का....................क्या वह स्टेशन के निकट है?
दोनो कुराइ नो क्योरि देस का....................वह कितनी दूरी पर है?
हिबिया एकि कारा दोनो कुराइ नो क्योरि देस का....................वह हिबिया स्टेशन से कितनी दूरी पर है?

शब्दावली

मिचि नो हूबू....................पथ निर्देश।
(ओ) किकिमास....................पूछना, सुनना।
मायोइमाशिता....................रास्ता भूल गया।
चिज़ु ओ काकु....................मानचित्र बनाना।
इतादाकेमास....................किसी अन्य से उपकार का आग्रह।
कोनो चिज़ु देवा....................इस मानचित्र पर।
गेनज़ाइचि....................मानचित्र पर अंकित 'आप यहां हैं'।
अमेरिका ताइशिकान मादे....................अमरीकी दूतावास को।
दोनो यू नि इकु का....................पहुंचने का मार्ग।
ओशिएते कुरेमास....................मौखिक जानकारी देना।
एकि....................स्टेशन।
दोनो यू नि इत्तारा ----....................मैं ---- कैसे पहुंच सकता हूँ?
---- ई देस का....................क्या मैं ----।
कोनो चिकाकु नि....................यहाँ आसपास।
चिकातेत्सु नो एकि....................मेट्रो स्टेशन।
हाकुबुत्सुकान....................संग्रहालय।
दोचिरा नो मिचि....................कौन सा मार्ग।
एकि नि चिकाइ....................स्टेशन के निकट।
दोनो कुराइ नो क्योरि....................कितनी दूरी पर।
कारा....................से।

आओ जापानी सीखें - ३१

सामान्य बातचीत

कूतसुयु (यातायात)

चिकातेत्सु (बासु / ताकुशी / देन्शा) नि नोरिमास....................मैं (बस / टैक्सी / रेलगाड़ी) से यात्रा करूँगा।
कोनो (बासु / देन्शा) वा ---- नि तोमारिमास का....................क्या यह (बस / रेलगाड़ी) ---- पर रूकती है?
एकि वा इकुत्सु अरिमास का....................इसके कितने विराम स्थल हैं?
योकोहामा ए इकु नि वा दोनो कूतसुयुकिकान गा इचिबान ई देस का....................योकोहामा पहुँचने का सर्वोत्तम मार्ग कौन सा है?
बासु तो ताकुशी देवा दोचिरा दे इकु नो गा ई देस का....................बस अथवा टैक्सी में से यात्रा के लिये कौनसा उत्तम है?

शब्दावली

चिकातेत्सु....................मेट्रो रेल।
बासु....................बस।
ताकुशी....................टैक्सी।
देन्शा....................विद्युत रेल।
नोरिमास....................रेलगाड़ी पर सवार होना।
कोनो बासु....................यह बस।
तोमारिमास....................रूकती है।
एकि....................विराम स्थल अथवा स्टेशन।
दोनो कूतसुयुकिकान....................कौन सा मार्ग।
इचिबान ई....................सर्वोत्तम।
दोचिरा दे ----....................कौनसा है ----।

रेयुकाई अभ्यास की प्रतिज्ञा

रेयुकाई के संस्थापक, श्रद्धेय काकूतारो कूबो जी ने कमल-सूत्र पर आधारित विश्व भर के मानव के लिये ऐसी शिक्षाओं को व्यवस्थित किया जिससे लोग बोधिसत्त्व अभ्यास पर चल सकें। उन्होंने समाज के सुधार और उसे श्रेयस्कर बनाने के लिये एक मार्ग सुझाया और कहा ''अनुकम्पापूर्वक ऐसा कर दें कि इन्हीं सच्चरित्र गुणों के बल से हम और सब प्राणी अग्रबोधि प्राप्त कर सकें तथा इस सद्धर्म का सर्वत्र प्रचार हो जाये।''

रेयुकाई की प्रथम प्रधान श्रीमती किमी कोतानी ने बुद्धत्व संसार के महत्व को पहचाना और उसके प्रसार के लिये कहा ''अगर सभी सदस्यों के परिवारजन रेयुकाई की शिक्षाओं का अभ्यास करें, तब उनकी संतति को अच्छा इंसान बनने का आशीर्वाद प्राप्त होगा और वे शांतिपूर्ण और आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। अगर इस तरह से प्रत्येक परिवार में होगा तभी बुद्धत्व संसार का निर्माण होगा।

माता-पिता और पूर्वजों के प्रति, गुरूओं के प्रति, देश के प्रति और सिद्धांतों के प्रति, हम इन चार कृतज्ञताओं के ऋणी और अनुगृहीत हैं, जिसे पूरा करके हमारा विश्व-शांति के लिये इससे बेहतर सहयोग और कुछ नहीं हो सकता। हम रेयुकाई के सदस्य, हमारे संस्थापकों और वरिष्ठ सदस्यों द्वारा प्राप्त महान उपलब्धियों का पालन करते हुये अपने कार्यों द्वारा एकत्रित किये गुणों से विश्व-शांति के लिये प्रयत्न कर सकते हैं।

इन्हीं कारणों से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि :

1. पूर्वज-स्मरण और मिचिबिकी का अभ्यास करेंगे।
2. खुशहाल परिवार और घर के महत्व पर ज़ोर देंगे व इससे प्राप्त उपलब्धियों का प्रसार करेंगे।
3. शिक्षाओं का अभ्यास करेंगे व समाज व समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करेंगे।

जिस तरह हम अपनी प्रगति, दूसरों के ज्ञान और बेहतर समाज के लिये प्रयत्न करते हैं, उसी तरह से हम विश्व-शांति स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था
पी-9/17, डी. एल. एफ़. सिटी, फ़ेस-2, गुड़गाँव - 122002 (हरियाणा, इंडिया)
दूरभाष : +91-124-4055267, 4055268 • टेलिफ़ैक्स : +91-124-4055269
ई-मेल : info@reiyukaiindia.org • वैबसाईट : http://www.reiyukaiindia.org

डिज़ाइन व मुद्रण : क्रिएटिव कन्वेंशन्स मोबाइल: 98110-76606 ईमेल: rajinderprabhkar@gmail.com